धर्म जीवन

अगस्त 2006

- स्वास्तित्व यज्ञ
- मोक्ष और विकास का मार्ग
- देवात्मा की मंगल कामना
- आपकी ज्योति मुझे असल रूप दिखाती है।
- झूठ आत्मा के लिए पतनकारी है।
- सेवक उत्सव

स्वास्तित्व यज्ञ

आज कल स्वास्तित्व यज्ञ के दिन हैं। स्वास्तित्व का अर्थ है हमारी शरीरिक, मानसिक शक्तियां व हमारी जीवनी शक्ति। हमारी जीवनी शक्ति ही मुख्य व सार वस्तु है, क्योंकि वही हमारे शरीर व उसमें मानसिक शक्तियों व भाव शक्तियों का विकास करती है। शरीर स्थूल है, वह हमें नज़र आता है, उसका सुख दुख अनुभव होता है, उससे बचने का हम संग्राम भी करते हैं। उसे तन्दरुस्त रखने के लिए हमें खुराक और व्यायाम का भी कुछ न कुछ बोध है और इस पहलु में कुछ न कुछ संग्राम भी करते हैं। जो जन इस विषय में भी कोई संग्राम नहीं करता, उल्टा शरीर को नशों, विषयों और आलस्य के द्वारा हानि पहुँचाता है, और कोई शक्ति वर्धक वस्तुओं का सेवन नहीं करता वह पूर्ण अबोधी है।

यहां तक तो कुछ न कुछ हमें समझ आता है और हम उस पर तरस खाते हैं, परन्तु आत्मा के विषय में, उसके रोगों और उनसे उत्पन्न दुखों उनसे बचने के संग्राम और उसको बल पहुंचाने वाले भावों के विषय में हम सब ही पूर्ण रुप से अबोधी हैं। आत्मा के भिन्न-भिन्न अंगों के ज्ञान पाने के विषय में हम अबोधी हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने अपनी अद्वितीय ज्योति में हमें आत्मा के रुप को दर्शाया है, उसके रोगों को बताया है। उन रोगों से बचने के महत्त्व वा तरीकों को बताया है। आत्मा की खुराक अर्थात उच्च भावों का ज्ञान दिया है। अपने अस्तित्व की रक्षा और विकास का मार्ग दर्शाया है।

इस अंक में देवात्मा जिस व्याकुलता से हमारे भले के लिए मंगल कामना करते हैं, वह लेख पाठकों के लिए अवश्य ही लाभ दायक होगा। उसके बाद हमारे आत्मा के महा कोढ़ अंह के विषय में लेख दिया गया है, जिसके कारण हम देवात्मा के निकट नहीं हो सकते। फिर हमारे बहुत श्रद्धा और सन्मान के योग्य पी. वी. कनल जी के ऐसे पत्र दिए हैं, जिनसे पता लगता है कि देवात्मा की ज्योति जिन सौभाग्यवान जनों को मिलती है, वह क्या अनुभव करते हैं। किस प्रकार वह अपने आत्मा के रूप को देखते हैं। अपने नीच अनुरागों की भयानक दासता को देखते है, उससे मुक्त होने की प्रेरणा लेते है। आशा है यह पत्र हमें अपनी ओर ध्यान ले जाने में बेहद सहायक होंगे। कुछ न कुछ उनसे प्रेरणा लेकर हम भी उस संग्राम की राह पर पड़ेंगे। यह मार्ग बहुत कठिन है, परन्तु अति आवश्यक है। हमारे अपने लिए वा आप सब पाठकों के लिए ऐसी कामना है कि हम इस अंक से लाभ उठा सकें और अपनी अपनी ओर ध्यान ले जा सकें।

सुरजीत बराड़

धर्म जीवन

खण्ड 18 अंक 8
अगस्त 2006
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मोक्ष और विकास का मार्ग

हमारी धर्म समाज में एक बहुत कीमती वा अर्थ प्रधान शब्द प्रचलित है: -

"उच्च जीवन के उच्च ही फल हैं, वृथा प्रचार सभी निष्फल हैं"।

यह शब्द सुनहरी शब्दों में लिखे जाने के योग्य हैं और अपने हृदय में हर धर्म अभिलाषी के लिए, गहरा उतारने की आवश्यकता है। यह शब्द संकेत देते हैं कि मुख्य वा असल वस्तु उच्च जीवन है, इसको कभी और किसी कीमत पर भी हृदय से नहीं उतारना चाहिए। यदि उच्च जीवन है तो प्रचार अपने आप होगा, उसके ठोस फल निकलेंगें और प्रचार वृथा नहीं जाएगा।

गुरू महाराज ने बार बार हमारा ध्यान इस सच्चाई की ओर फेरा है, उन्होंने फरमाया है: -

"तुम जीवन लाभ करके ही किसी को जीवन दे सकते हो"

"यदि तुम स्वंय नीच गतियों से नहीं बच सकते, तो तुम औरों को भी नीच गतियों से नहीं बचा सकते।"

"जब तक कर्मचारी का अपना जीवन न बनें, तब तक वह किसी और का जीवन नहीं बचा सकता।"

"बनाने का काम पहले करने की अवश्यकता है, पहले कोई खुद बनें, फिर बनाने का काम करें।"

उच्च जीवन के लिए मोक्ष और विकास की तीव्र इच्छा और उसके लिए संग्राम की अवश्यकता है। इस इच्छा और संग्राम के बिना हमारे प्रचार, हमारे सत्संग सभाएं, हमारे अधिवेशन और शिविर सब निष्फल हैं। सब फोके फायरों के समान है। उनका कोई उच्च फल नहीं निकलता। कागजी फूल कभी सुगन्ध नहीं देते।

इसलिए हमारे लिए यह अति अवश्यक है कि हम देखें कि हम उच्च जीवन अकांक्षी बन गए हैं? क्या हमारे भीतर आत्म - हित अभिलाषा जाग गई है? क्या हमारा कोई मोक्ष और विकास का संग्राम आरम्भ हो गया है, या हम अपना निज का साधन करके, कुछ महिमा के गीत गाकर, किसी अंश कभी प्रभावित होकर, कभी कुछ महिमा देखकर और कभी कुछ अपनी कमी देखकर ही सन्तुष्ट हैं। इसी को अपना

हित का मार्ग समझकर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इसी अवस्था द्वारा मोक्ष और विकास की प्राप्ति की ही आशा कर रहे हैं।

हमें यह बहुत अच्छी तरह जान लेना चाहिए कि मोक्ष और विकास का विशेष निरधारित मार्ग है। उसको जानना और पूरा करना अति अवश्यक है। उस मार्ग को जाने बिना कोई जन उच्च जीवन प्राप्त नहीं कर सकता।

सबसे पहले अवश्यकता है अपने अंह को प्रकृत रूप में देखने, जानने और उससे विरत होने का संग्राम करने की। अंह के काफी मात्रा में घटने वा नष्ट हुए बिना किसी भी मनुष्य को देवात्मा के आद्वतीय देव प्रभावों का गुजारे योग्य मिलना भी असम्भव है। मनुष्य के लिए देव प्रभावों की प्राप्ति के मार्ग में अंह पहाड़ जितनी अड़चन है। इसका दमन होना वा नष्ट होना अवश्यक है। इसके बिना देव ज्योति के पाने का सिलसिला चल ही नहीं सकता।

देवात्मा की ज्योति बराबर पाए बिना मनुष्य को सारे नीच अनुरागों का प्रकृत ज्ञान नहीं हो सकता।

इसलिए प्रत्येक सच्चे जीवन अभिलाषी के लिए अपने साधनों में गुरू महाराज की ज्योति में अपनी कमीयां, नीचताएं, दुष्टताएं अपने अपराधों को देखना और हररोज़ घन्टा भर उनको लिखना अवश्यक है। जो ऐसा साधन कई वर्षो तक निरन्तर जारी नहीं रख सकता, वह अपने अंह जात घमंड और घृणा के प्रकृत रूप में दर्शन भी नहीं कर सकता। ऐसा मनुष्य मोक्ष और विकास तो एक तरफ वह अपने अति भयानक अंह के प्रकृत रूप में दर्शन ही नहीं कर सकता। वह इस पक्ष में अन्धा ही कबर में चला जाता है। अपने अंह को देखना वा जानना हम धर्म अभिलाषी जन के लिए अवश्यक है। 4 - 6 महीने अपनी कमीयां वा नीचताएं लिखते रहकर कुछ कुछ रोशनी मिलने लगती है, जो हमें अपने महा रोग वा कोढ़ का ज्ञान दे सकती है और इससे मुक्त होने का फिक़र पैदा कर सकती है।

गुरू महाराज ने इस पक्ष में भी जगह जगह यह रोशनी प्रदान की है। उन्होंने फरमाया है :-

"याद रखो, 'मैं' को मारे बिना तुम्हारा कुछ नहीं बन सकेगा।"

गुरू चरणों में आकर, उनके आद्वतीय मिशन का अंग बनकर, हमें अपनी 'मैं' को मारना अति अवश्यक है। हमारी "मैं" पहाड़ की तरह हमारे हित के मार्ग में अड़चन बनी हुई है।

उपरोक्त अपनी नीचता के विषय में साधन करते करते हमें देव प्रभाव मिलने लगते हैं, जो हमें हमारा घंमड और नीच घृणा दिखाते हैं और धीरे धीरे उनसे मुक्त करते हैं। अपने अंह का सच्चा बोध और उसका सच्चा खौफ और दुख हमें एक नई दुनियां में जन्म देता है, हम इस बोध के दाता के महा ऋृणी अनुभव करते हैं और धन्य धन्य होते रहते हैं।

उपरोक्त शुभ संग्राम के अर्थात अपनी "मैं" को मारने के संग्राम के लगातार वर्ष दो वर्ष जारी रखने से धीरे धीरे नेचर का आत्मिक जगत का महान नियम पूरा होने लगता है, वह यह कि अधिकारी मनुष्य को देवात्मा के लासानी देवरूप की अनोखी झलक दिखाई

देने लगती है। इस सम्बन्ध में देवात्मा ने सिद्धान्त दर्पण में विशेष रूप से लिखा हैं: -

"अधिकारी और अनाधिकारी आत्मा" इस हैडिंग से स्पष्ट किया है कि ज्यों ज्यों अंह का अधिकार घटता जाता है, वैसे - वैसे मनुष्य देव प्रभावों की प्राप्ति का अधिक अधिकारी बनता जाता है। अंह के अधिकार के विशेष सीमा में घटने से अधिकारी जनों को ऐसी विलक्षण ज्योति या प्रभावों का दान मिलता है जो उसे देव रूप की अति सुन्दर और अति आकर्षिणीय झलक दिखानी शुरू करता है और इस झलक को अधिक से अधिक देखने के योग्य होना और उसके आगे आपार दीनता से नत मस्तक होना आरम्भ हो जाता है। यही देवात्मा की सच्ची पूजा है। इससे अधिकारी मनुष्य के भीतर अपनी योग्यता के अनुसार देवात्मा के महा विशाल और महान रूप के लिए अटल विश्वास, श्रद्धा, कृतज्ञता के भाव पैदा होने लगते हैं। इनके बढ़ने से अधिकारी आत्मा को देवात्मा के जोरदार देव प्रभावों की प्राप्ति के साथ उनका रूप अति आकर्षणीय दिखाई देने लगता है, जिससे अधिकारी आत्मा झुक झुक कर उनके साथ जुड़ा हुआ अनुभव करता है। कभी बिछड़ना नहीं चाहता। इस अवस्था में पहुंचकर इन्सान को इतने प्रभाव मिलते हैं कि वह अपने अंह अनुराग, काम अनुराग, धन सम्बन्धी अनुराग, लोभ लालच, स्वार्थ अनुराग और मोह लालसा आदि से मुक्त होने की सच्ची इच्छा महसूस करता है। ज्यों - ज्यों अधिकारी आत्मा देवात्मा के महा आर्कषणीय रूप को देख देखकर रोज रोज विस्मित होता है, त्यों - त्यों उसको उपरोक्त नीच अनुरागों से अपने आप मोक्ष प्राप्त होती जाती है और देवात्मा के साथ जोड़ने वाले सर्वोच्च भावों का विकास होता जाता है। स्वार्थ के नाश और परोपकार धीरे - धीरे विकसित होते जाते हैं। अधिकारी मनुष्यात्मा का पूर्ण जीवन सफलता के मार्ग पर अडिग पड़ जाता है और अकसर धन्य - धन्य रहता है।

ऐसा अधिकारी जन जो स्वंय मोक्ष और विकास का राही बन जाता है, वह जो प्रचार आदि का संग्राम करता है वह पूर्ण निष्फल नहीं जाता।

काश! हम अधिक से अधिक संख्या में उक्त मार्ग को पहचान सकें और उसको अपना कर अपना और दूसरों का हित कर सकें।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

देवात्मा की मंगल कामना

मनुष्य जगत् छोटे बड़े, विद्वान अविद्वान, धनी कंगाल, रोगी और निरोगी करोड़ों जनों से परिपूर्ण है। यह सब मनुष्य अपनी जीवनी शक्ति के विविध प्रकार के भावों से परिचालित होकर प्रति दिन एक वा दूसरे प्रकार की गति कर रहे हैं। परन्तु इस पृथिवी के करोड़ों जनों को यह कुछ भी बोध नहीं, कि वह अपनी इन नाना गतियों के द्वारा अपने अपने आत्माओं को किधर की ओर ले जा रहे हैं। वह अपने अस्तित्व अथवा जीवन के नियमों से सर्व्वथा अन्ध वा अज्ञानी हैं। वह इस अन्धता में रहकर और नाना मिथ्या संस्कारों और अपनी वासनाओं और उत्तेजनाओं आदि के अधीन होकर दिनों दिन विनाश पथ की ओर जा रहे हैं। ऐसे सब जनों की यह अवस्था कैसी शोचनीय! जीवनी शक्ति के विविध जगतों के शिरोमणि जगत् में उत्पन्न होकर भी जो मनुष्य अपने आत्मा की अवस्था से अन्धा है और अपनी आत्मिक गतियों के सम्बन्ध में कोई हितकर विवेक नहीं रखता और अपनी विनाश कारी गतियों से उद्धार और विकासकारी उच्च भावों की प्राप्ति के लिए अपने हृदय में कोई संग्राम नहीं अनुभव करता, वह किस कदर कृपा पात्र है!! किसी देश की किसी सोसाइटी या समाज में वह कैसी ही इज्जत से देखा जाता हो, धनी होने के कारण कितने ही नौकर चाकर और बाहर के आडम्बर रखता हो, वह एक या दूसरे देश का राजा वा महाराजा हो, अथवा किसी स्थान का शासन कर्त्ता हो, परन्तु इस में कुछ भी सन्देह नहीं, कि वह अपनी इस अन्धता और अबोधता के विचार से अत्यन्त कृपा पात्र है। जीवन धारी होकर जीवन विद्या को न जानना, जीवन विषयक तत्वों के जानने के लिए आकांक्षी न होना, अथवा जीवन विषयक तत्व शिक्षा के मिलने पर भी अपने हृदय में से किसी उच्च बोध वा शक्ति के उत्पन्न करने की योग्यता न रखना अत्यन्त दुखदाई है।

ऐसे सब कृपा पात्र जनों की इस महा शाचनीय अवस्था पर सिवाय देवात्मा के और कौन प्रकृत रूप से दुखी हो सकता है? ऐसे अस्तित्वों की सच्ची मोक्ष और उनके आन्तरिक विकास के लिए और कौन व्याकुल हो सकता है? कोई नहीं। जैसे कोई सोया हुआ जन किसी और सोए हुए जन को नहीं जगा सकता, वैसे ही जीवन विषयक तत्व ज्ञान की अमूल्य ज्योति और उच्च शक्तियों से विहीन आत्मा एक दूसरे की अन्धता और अबोधता को न अनुभव कर सकते हैं, और न दूर कर सकते हैं। इसीलिए जीवन विद्या विशारद और सत्य धर्म विषयक सब शक्तियों से भरपूर भगवान् देवात्मा के भिन्न ऐसे आत्माओं तक जीवन पथ दर्शक और उच्च ज्ञान और भाव विकासक और नीच गति विनाशक शक्ति कोई और नहीं पहुंचा सकता। इस विश्व में ऐसे देवात्मा का प्रगट होना उसके विकास क्रम में एक लाज़मी अमर था। जिस देश वा जाति में उसका आविर्भाव हुआ है, वह धन्य है।

यह देवात्मा उनका परम हितकर्त्ता, परम मित्र, परम पूजनीय और परम आर्दश है। वह उनके आत्मिक अस्तित्व की रक्षा और उन्नति के निमित

अपने हृदय में जितनी व्याकुलता और उनकी अन्ध और अबोधी, और नीच और बुरी अवस्था के लिए जितना दुख अनुभव करता है, उतना कोई और अनुभव नहीं कर सकता। फिर भी हाय! वह उसे नहीं पहचानते, उसे अपना सच्चा और पूर्ण मित्र, उद्धार और परम हित कर्त्ता अनुभव करने की योग्यता नहीं रखते। किस कदर शोचनीय!

इन आत्माओं में से जो जन जितने दर्जे अधिक अन्धे और अबोधी और नीच गति परायण हैं, वह स्वभावत देवात्मा को उतने हि दर्जे अधिक घृणा की दृष्टि से देखते हैं, और उस से दूर दूर रहना चाहते हैं। और यदि किसी अनुकूल घटना के द्वारा उन में से कुछ किसी समय में उसके प्रति आकृष्ट होते हैं, तो उन्हीं में से कितने ही उसे अपनी एक वा दूसरी प्यारी परन्तु नीच गति उत्पादक वासना वा रुचि आदि के विरोधी पाकर स्वभावत: उस से परे चले जाते हैं, और उसे घृणित रूप में देखने लगते हैं। किसी आत्मा की हृदय भूमि जितनी खराब होती है, उतना ही वह जीवन विषयक तत्व ज्ञान की ओर से अन्धता में रह कर तृप्ति पाता है, और नीच गति को अवलम्ब करके सुखी रहता है। परन्तु **देवात्मा** उन्हें इस अवस्था में देखकर सुखी नहीं हो सकता, और आराम वा तृप्ति नहीं पा सकता। वह उनके उद्धार और कल्याण के लिए संग्राम करता है। ऐसा करना उसके लिए स्वाभाविक है। जैसे अन्धकार ग्रस्त नीच आत्माओं के लिए उस के उदासीन वा परे परे रहना, अथवा इस से भी बढ़कर उसे घृणित रूप में देखना, एक स्वाभाविक बात हैं, वैसे ही उसके लिए, उन तक जो उसे घृणा करते हैं, अथवा उस से उदासीन रहते हैं वा परे जाने में आराम पाते हैं, अपनी **ज्योति** और **शक्ति** पहुंचा कर उन्हें अन्धकार और विनाश के पथ से मोड़कर ज्योति और जीवन पथ की ओर लाना वा लाने के लिए संग्राम करना स्वाभाविक बात है।

ऐसा हो, कि नेचर के इन्तज़ाम के अनुसार देवात्मा की जीवन विषयक तत्व ज्ञान की यह ज्योति जहां जहां तक और जिस जिस जन में प्रवेश कर सकती हो, वहां वहां तक उस में वह प्रवेश करे, और जिन जिन के हृदय में उसकी एक वा दूसरी उच्च शक्ति पहुंचकर उन्हें नीच गतियों के विनाशकारी पथ से जहां तक मोड़ सकती हो, और विकासकारी उच्च पथ पर ला सकती हो, वहां तक वह उनकी सत्य मोक्ष और उनके सत्य विकास का हेतु बने।

मंगल कामना विषयक गीत

जीवन पथ दर्शक मम ज्योति, क्यों नहीं तुम में हो संचार
क्यों नहीं अन्धकार तव नाशे, हृदय हो तुमरा उजियार।
क्यों नही मेरी शक्ति पाकर, दिन दिन हो तुमरा उद्धार
क्यों नही मुझसे प्रेम से जुड़कर विकास का हो तुम में प्यार।

आपकी ज्योति मुझे अपना असल रूप दिखाती है

मेरे पूजनीय सतगुरू!

मैं जीवन व्यतीत करता था, परन्तु मैं जीवन की फिलासफी, आत्मिक शक्तियों का महत्त्व, तथा नीच प्रकृति की बेलगाम ताकतों - जिन्हें मैंने अपने अन्दर बढ़ा लिया था, और जो मुझे जंगली पशु बना रही थीं - के खतरों से अनजान था। पूर्ण स्वार्थी जीवन व्यतीत करने और दुनियां को अपनी नीच रुचियों की तृप्ति का अखाड़ा बनाने की अपनी भयानक छवि मुझे भयभीत नहीं करती थी। मेरी बेलगाम नीच रुचियां मुझे दूसरों के लिए हानिकारक और दुखदायक बनाती थी। मेरे दूषित विचार मुझे दूसरों के अधिकारों का अपहरण करने की तरफ ले जाते थे। **परन्तु मुझे उनका पता कुछ नहीं था। उन घृणित विचारों और कामों की लड़ी अब अपने असल घृणित रूप में मेरे सामने आ रही है।** आपकी ज्योति ने मुझे अपनी पिछली तस्वीर दिखा दी है और मैं अत्यन्त लज्जित हो रहा हूं। मनुष्य के रूप में जन्म लेकर मैं एक जंगली जानवर का जीवन व्यतीत करता था। अहंकार के अधीन होकर मैं अपने उपकारियों का भी अपमान करता था। मेरे ऊपर ग़लत ताकतों का राज्य था और दूसरों के सम्बन्ध में मैं ग़लत जाता था। मेरा आत्मा खतरनाक, हानिकारक और विषैले फल पैदा करता था। हाय! मेरी कैसी दशा होती, यदि मैं उसी पथ पर चला चलता। परन्तु आपकी ज्योति ने मेरी उद्दण्ड नीच प्रकृति का हानिकारक रूप मुझे दिखाया है और कम से कम कुछ पतनकारी रुचियों से मेरे भीतर घृणा पैदा कर दी है। मैं उनसे बच गया हूं। मुझे उनके भयानक नतीजों से बचा लिया गया है। अब मैं आपको ज्योति स्त्रोत जान कर पथ प्रदर्शन प्राप्त करने के लिए आपके चरणों की ओर दौड़ता हूं। आपने एक सीमा तक मेरे भीतर सच्ची सहानुभूति, सच्ची बन्धुता, सच्चा सेवाभाव और उच्च संगत की भूख पैदा की है। मैं बुरी संगत - चाहे वह इस दुनियां के बड़े से बड़े लोगों की भी क्यों न हो - के भयानक फलों को देखने के योग्य हो गया हूं। मैं उनसे परे रहता हूं। मैं प्रतिदिन आपके दर तक पहुंचता हूं और वह बरकतें पाता हूं जिनका मैं वर्णन नहीं कर सकता। वह आनन्द और स्वर्गीय सुख अनुभव करने की वस्तु है, बयान करने की नहीं। मेरा जीवन एक सीमा तक सुन्दर बन गया है। आपने इसे हितकर बना दिया है। काश! मेरा दिल सदा श्रद्धा से आपके चरणों में झुका रहे।

जीवन पथ कुछ और है, विद्या बुद्धि और

मेरे भगवान्!

यद्यपि मैंने एक भारतीय विश्वविद्यालय की सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त की थी और उस विश्वविद्यालय की दर्शन (फिलासफी) और मनोविज्ञान की सबसे ऊंची परीक्षा पास की थी, फिर भी मैं अन्धकार में भटक रहा था। मुझे ज्ञान नहीं था कि मेरा आत्मा गठन प्राप्त जीवनी शक्ति है और विकास, पतन और मौत के नियमों के अधीन है।

मैंने कालेज में नैतिक फ़िलासफ़ी (Moral Philosophy) विषय लिया, परन्तु यह सारा ज्ञान मुझे अपने आत्मिक रोगों का और मनोविज्ञान मुझे जीवन की नीच और हानिकारक गतियों और उनके भयानक फलों को न दिखा सके। मैं वही हानिकारक जीवन

व्यतीत करता था, उसके बढ़ जाने पर दुखी भी होता, परन्तु मैं उसके विषय में अज्ञानी था। जब आपकी सर्वोच्च ज्योति मेरे आत्मा में प्रविष्ट हुई तो मैंने वह ज्ञान प्राप्त किया जो मेरे लिए एक महान वरदान सिद्ध हो रहा है। मैंने अपनी रुचियों के असल रूप को देखा है और मैं न केवल अपने आपको किन्तु दूसरों को भी उनके भयानक फलों से बचाने के योग्य बन रहा हूं।

हे मेरे पूजनीय सत्गुरू! तब मैं आपको किन शब्दों में धन्यवाद दूं? मैं दिल की गहराई से यह कामना करता हूं कि आप हमारे सिरों पर देर तक विराजमान रहें।

आपकी ज्योति हमें होश की अवस्था में रखती है

मेरे पूजनीय सत्गुरू!

आपकी ज्योति महा अमूल्य है, क्योंकि वह मनुष्य को होश की अवस्था में लाती है। मनुष्य आत्मा जो नीच रुचियों और नीच अनुरागों तथा अहंकार की विकृत शक्तियों के अधीन हैं, अपना बहुत सा समय धोखे में गुज़ारते हैं। ऐसी अवस्था में वह होश जिसमें सच्चाईयां अपने असल रूप में दिखाई देती हैं, सम्भव नहीं है। अपनी ज़ात को ऊंचा समझना, जबकि वास्तव में बात इसके उलट प्रतीत होती है, निपट पागलपन है। विवाह, मृत्यु तथा अन्य अवसरों पर अपने घमंड को तृप्त करने के लिए हज़ारों रुपए खर्च करना और भले काम के लिए दान देते समय दिल में दुख महसूस करना, पागलपन के सिवाए कुछ नहीं। केवल धन की खातिर धन इकटठा करना और इसी को जीवन का लक्ष्य बनाना पागलपन है। अपने बच्चों को आसमान से उतरे हुए और दूसरों के बच्चों को उनसे घटिया समझना, चाहे सच्चाई उसके उलट ही हो, धोखा और पागलपन है। अपने अनाधिकारी बालिग बच्चों के लिए धन छोड़ जाने के लिए धन एकत्र करना, जबकि वह बच्चे अपने पावों पर खड़े होने के योग्य हों, और एक हितकर समाज या मनुष्य मात्र की भलाई की परवाह न करना, जबकि उनका नैतिक हक अधिक हो, पागलपन और उलटी दृष्टि है। मिथ्या विश्वासों को निजी वस्तु समझ कर उनके साथ चिपके रहना और दलील, परीक्षा या तजरबे की अपील को परे फैंकना, एक धोखा और पागलपन की बात है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण दिए जा सकते हैं।

भगवन्! मैं देखता हूं कि लाखों मनुष्य धोखे में ही जीवन व्यतीत करते हैं। वह असलियत से परे जीवन व्यतीत करते हैं और इसी अवस्था में मर जाते हैं। जिन्हें आपके श्री चरणों में आने और आपके देव ज्योति और देव तेज सम्पन्न देव प्रभावों को पाने का अधिकार मिलता है, वह जानते हैं कि आपके श्री चरणों में रहना कैसा सौभाग्य है। आपकी ज्योति के प्रकाश में यह धोखे दूर होने आरम्भ होते हैं। नीच रुचियां और नीच अनुराग तथा अंह सम्बन्धी शक्तियां, जो बढ़ते बढ़ते आत्मा के रोग बन गए हैं, उन उच्च शक्तियों से नष्ट होने लगते हैं कि जो उच्च शक्तियां आप अधिकारी मनुष्यों में पैदा करते हैं यही कारण है कि जब तक यह होश की अवस्था कायम रहती है, आपके तुच्छ सेवक आपकी महिमा के गीत गाते नहीं थकते। उनके इर्द गिर्द के लोग उन्हें पहले से पूर्णत: भिन्न और आदर के योग्य देखने लगते हैं।

मैंने भी आपके चरणों में बहुत लाभ उठाया है। आपने कुछ सम्बन्धों में मुझे होश की हालत में आने के योग्य बनाया है। इससे आगे आपने मुझे अपने उन नीच भावों को देखने के योग्य बनाया है, जो धोखे पैदा करते हैं और अब मैं जानता हूं कि मेरी

अपनी शक्तियों पर यह भरोसा नहीं किया जा सकता कि वह मुझे ठीक मार्ग पर ले जाएंगी।

सन्तान अनुराग का बोध

मैं आपकी रोशनी में प्राय: प्रतिदिन इन दो विषयों पर विचार करता रहा हूं :-

(क) काम अनुराग मूलक नीच बन्धन

(ख) सन्तान अनुराग मूलक नीच मोह बन्धन आदि।

सन्तान अनुराग के सम्बन्ध में मुझे जो कुछ अनुभव होता रहा है, वह यह है:-

(१) इस अनुराग से परिचालित होकर मैं अपने बच्चों के स्थूल शरीर को प्यार करता हूं। यह मुझे उनके आत्माओं की सम्भाल और रक्षा की ओर ले जाने की योग्यता नहीं रखता। इसलिए मैं अस्थिर और असार धरती पर चलता हूं; क्योंकि एक तो उनके आत्मिक हित की ओर से अन्धा होकर मैं उनका उच्च कोटि का उपकारी नहीं बन सकता, दूसरे मैं उस वस्तु, अर्थात उनके स्थूल शरीर को जिसे, सदा के लिए इस संसार में रखना असम्भव है, प्यार करता हूं। अत: मैं अपनी जिन्दगी रेत पर खड़ी करता हूं, और जब मुसीबतें आती हैं- कि जो अवश्य आती हैं-रेत की नींव खिसक जाती है, तब मानो मेरा सब कुछ लुट जाता है। यह अवस्था कैसी भयानक और कितनी शोचनीय!

(२) मुझे केवल उनके स्थूल शरीर ही दिखाई देते हैं। उनकी शारीरिक आवश्यकताएं या शारीरिक सुखों का अभाव जितना मुझे बेचैन करता है, उतना बेचैन मुझे उनकी आत्मिक आवश्यकताएं नहीं करतीं। इससे मेरा बहुत अनिष्ट हो सकता हैं जैसा कि उन अनेक जनों का हुआ है जो अपने बच्चों के लिए रुपया छोड़ जाने या उनके शरीरों के लिए सुख स्वाद के सामान जुटाने और उन्हें मानसिक शिक्षा देने के लिए उच्च वातावरण को छोड़ गए हैं और अपने बच्चों को भी उससे बाहर ले गए हैं। मुझे पता है कि कुछ अवस्थाओं में माता पिता की गलती के कारण बच्चे देव समाज को ही छोड़ गए हैं।

(३) यदि यह सन्तान का अनुचित प्यार बहुत बढ़ जाए, तो यह मुझे उच्च जीवन और पर-सेवा से दूर ले जाएगा और मेरा बहुत सा कार्यगत समय स्वार्थ पूर्ति में व्यतीत होगा और मैं खुशी खुशी नीच वस्तु के लिए श्रेष्ठ वस्तु की कुर्बानी दूंगा।

(४) यह मुझे अन्यायकारी (unjust) और अनुदार (unfair) बनाता है।

(५) इसके अधीन रह कर मुझे अपने बच्चों के तो पहाड़ जैसे दोष भी राई जितने दिखाई देते हैं और दूसरों के छोटे दोष भी पहाड़ जितने लगते हैं। इस प्रकार मेरी देखने की ताकत पर परदा छा जाता है।

(६) सन्तान का प्यार नीच आत्माओं को मेरा मालिक बनाता है जो कि एक भयानक स्थिति है।

(७) जितने अंश यह मोह बलवान होता है, उतने ही अंश आपके साथ मेरा सम्बन्ध कमज़ोर होता है। मैं इसे अपना बड़ा दुर्भाग्य समझता हूं।

(८) उच्च जीवन में मेरा विकास खतरे में पड़ जाता है।

मैं अब इस अंग में अपने अपको अधिक रोशनी में पाता हूं। और अभी कई महीने और कई वर्ष मैं इस पर चिन्तन करूंगा। सम्भव है, आपकी शक्ति

पाकर मैं इन नीच अनुरागों से ऊपर हो सकूं।

देव ज्योति में ही हमें अपनी उल्टी दृष्टि का बोध होता है

मेरे भगवन्!

कुछ समय से मैं प्राय: प्रतिदिन अपने निज के साधन में 'मनुष्यात्मा के संबंध तत्त्व' नामक अति मूल्यवान पुस्तक का पाठ करता हूं। मैंने उस अध्याय का बार बार पाठ किया है जिसमें नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से उत्पन्न महा भयानक फलों का वर्णन है। इनमें से एक है आत्मा की उल्टी दृष्टि। यह फल उतना ही सच है जितना कि यह भयानक है। इस प्रकार के कुछ तजरुबे मैं अपने और दूसरों के जीवनों से नीचे लिखता हूं-

१. माता के सम्बन्ध में उल्टी दृष्टि

मेरी बहुत छोटी सी आयु में मेरे पिता जी का देहांत हो गया था। मेरी माता जी ने हमें पालने में बहुत संग्राम किया। आपकी अद्वितीय रोशनी प्राप्त करने से पहले मेरे दिल में विषैला विचार उठता था। वह यह था कि जब मैं अपने कमाए हुए पैसों से उनकी सहायता करता, तो मैं यह समझा करता कि मैं माता पर एहसान कर रहा हूं। आपकी रोशनी में मैं अनुभव करता हूं कि यह भाव कितना ग़लत था। मैं माता के ऋण को अपनी तुच्छ सी सेवाओं से कैसे उतार सकता था? उन पर कोई मेहरबानी करने का तो प्रश्न ही उत्पन्न नही होता था। मुझे आपने एक भयानक उलटी दृष्टि से बचा लिया।

जब मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता था तो मेरी माननीय माता जी को किसी दूर के स्थान में एक भारी बंडल ले जाना था। उन्होंने मुझे ऐसा करने के लिए कहा। बंडल उनके लिए बहुत भारी था और हमें अन्य कोई सहायता प्राप्त नहीं थी, इसलिए वह मुझे ले जाना पड़ा। लेकिन सारा रास्ता में उनके प्रति कठोर शब्द बोलता रहा और बुड़बड़ाता रहा। इसका कारण यह नहीं था कि मैं बंडल उठा नहीं सकता था। इसका कारण तो यह था कि मैं समझता था कि मैं ऐसा काम करके लोगों की नज़रों में छोटा हो जाऊंगा। यह मेरी शोचनीय उल्टी दृष्टि थी। आपकी रोशनी से वंचित होने के कारण मैं नहीं देख सका कि मेरी माता को मदद की जरूरत है, वह माता जिसने मेरी इतनी बड़ी सेवा की है। मैं इस धोखे में रहता था कि सारे संसार की आंखे मेरी ओर लगी हुई हैं, मानों दुनियां को अन्य कोई काम नहीं नहीं और यह मान भी लिया जाए कि लोग मेरी कल्पना के अनुसार ही सोचते होंगे, तो भी मैं कोई पाप नहीं कर रहा था। हाय! मेरी कैसी भयानक अवस्था कि मैं नीच दुनियादारों की ओर से कुछ प्रशंसा के खोखले शब्द न मिलने के डर से अपनी माता की भी सहायता न करूं।

२. अध्यापकों के सम्बन्ध में उल्टी दृष्टि

जिस संगत में मैं रहता था, उसने मुझे यह दिखाया कि अध्यापकों का अपमान करना एक अच्छी बात है। जब मैं कालेज में गया, तो मुझे बताया गया कि कालेज का विद्यार्थी तो एक स्वतंत्र पक्षी है और उसे अधिकार है कि जो प्रोफेसर उसकी आज़ादी में दख़ल दे, उसे उसका मजा चखाए। मेरे भीतर यह विश्वास भरा गया कि जमात में प्रोफेसर की हंसी उड़ाना या उसकी पीठ पीछे उसका मखौल उड़ाना एक आज़ाद कालिजिएट की निशानी है। अपने दिनों में मैं भी कुछ अध्यापकों का अपमान किया, उनकी आज्ञा के विरुद्ध हरकतें की और प्रोफेसरों का मखौल उड़ाने

में दूसरों का साथ दिया। अब यह सारी अवस्था मुझे एक भयानक उल्टी दृष्टि मालूम होती है।

आपकी देव ज्योति पाने के बाद कालेज में ही मेरा व्यवहार बदल गया। परन्तु बीते जीवन के दुखदाई धब्बे मेरी आत्मा पर वर्तमान हैं और मैं उन दिनों को याद करके रोता हूं जब मैं ऐसे विषाक्त प्रभावों से घिरा हुआ था। आपकी ही देव ज्योति में मुझे दिखाई दिया कि मेरे अध्यापक मेरे उपकारी थे। कालेज के दिनों में जब मुझे आपकी शरण मिल चुकी थी तो जिन अध्यापकों का मैंने उनके सम्बन्ध में अपनी नीच गतियों का अपने उस समय की योग्यता के अनुसार यथा समर्थ्य परिशोध किया। अध्यापक दंग रह गए और उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम्हारे अन्दर यह आश्चर्यजनक परिवर्तन कैसे आ गया? मैंने उन्हें देव समाज के द्वारा अपने जीवन में आए परिवर्तन की कथा सुनाई।

३. आत्मिक उपकारी के संबंध में दुश्चिन्ताएं

जब मेरे अंहकार के नीच अनुराग पर चोट लगती है तो मेरी निगाह उल्टी हो जाती है। मुझे श्री भाई मोहन देव जी के सम्बन्ध में एक घटना याद है। यह बम्बई की और 1905 ई. की बात है, जबकि मैं कालेज के वातावरण से विषाक्त था। मैं क्षुद्र प्रकार की बातें करने लगा। उन्हें इससे दुख हुआ और तनिक कड़े शब्दों में मुझे समझाया। इस पर मै उल्ट पुलट हो गया। कम से कम उस समय के लिए उनके सब उपकार मैं भूल गया और मैं उनके सम्बन्ध में दुश्चिन्ताएं करने लगा। कैसी भयानक उल्टी दृष्टि! वह मेरे महान उपकारियों में से एक थे, जिन्होंने मुझे उस समय समझाया जब मैं ग़ल्त जा रहा था, परन्तु मैं उन्हें उस समय मेरे साथ बहुत बड़ा अन्याय करने वाला अनुभव किया।

४. अपने दोषों को मानने के सम्बन्ध में उल्टे विश्वास

जब मैं अपनी पुरानी बिरादरी और पुराने सम्बन्धियों और सोसाइटी के वातावरण में सांस लेता था, तो एक और विषैली धारणा मेरे दिल में प्रवेश कर गई थी, जिसने अब तक भी मेरे दिमाग से अपना अधिकार पूर्ण रूप से नहीं छोड़ा। वह उल्टी धारणा यह थी कि जो मनुष्य जीवन में सफल होना चाहता है, उसे अपने आप को दुनिया के सामने ठीक ठाक प्रगट करना चाहिए, चाहे उसके आत्मा को विनाश के कीड़े खा रहे हों। जीवन का मंत्र यह बना हुआ था, "जो मन में आए करो, परन्तु कानून की पकड़ में आने से सावधान रहो।" आपकी ज्योति में यह विश्वास कितना भयानक प्रतीत होता है। आपकी ज्योति दिखाती है कि चाहे मुझे कोई न भी देखे, तो भी मेरा आत्मा प्रत्येक नीच भाव, विचार, और कार्य से नीच बनता है, और सोसाइटी में मुझे केवल उसी स्थान या पद की इच्छा करनी चाहिए जिसका मैं अधिकारी हूं। ऐसे मान यश की भूख नहीं रखनी चाहिए जिसका कि मैं अधिकारी नहीं।

उपरोक्त दूषित प्रभावों ने जो मैंने पुरानी सोसाइटी से प्राप्त किए, मुझे लम्बे काल तक अपने दोषों को देखने, और देखने पर उन्हें मान लेने का अयोग्य बनाए रखा। उन्होंने मेरे भीतर झूठी प्रशंसा और बड़ाई की लालसा भी पैदा कर दी, चाहे मैं उसका अधिकारी न भी हूं। कैसी उल्टी दृष्टि!

५. झूठा दिखावा

मेरे प्रान्त के बहुत से विद्यार्थी जब कभी अपने प्रान्त से बाहर जाते, तो अमीरों की न्याई ठाठ बाठ से पहनते, खाना खाते और रहते सहते, चाहे उस

फिजूलखर्ची के कारण मां बाप को दुखी दिन और बेचैन रातें काटनी पड़ती। हमारे रहन सहन को देख कर वहां के विद्यार्थियों पर यह प्रभाव पड़ता कि यह राजकुमार हैं। हम अपने आपको बहुत बड़ा प्रगट करते। हमारे प्रान्त के एक भद्र पुरूष, जो प्रान्त के मुख्य नगर में रहते थे, हमारी ऐसी दशा को देख कर बड़े दुखी और निराश हुए और उन्होंने हमारा असली रूप दिखाते हुए एक पत्र अंग्रेजी दैनिक अखबार को लिखा। झूठी और बनावटी पोज़ीशन बनाए रखने की हानियों से बचाने की उनकी कोशिश का धन्यवाद करने के स्थान पर मैंने और दूसरे विद्यार्थियों ने उन्हें बुरा भला कहा और उन पर झूठे इलज़ाम लगाए।

आपकी ज्योति ने इस सम्बन्ध में मेरे दृष्टिकोण को बहुत बदल दिया है। और आपकी शक्ति से मैं किसी सीमा तक दूसरों के सामने अपने आपको झूठ मूठ बढ़िया दिखाने की आदत को छोड़ने के योग्य हो गया हूं।

एक दिन मैं जिला मैजिस्ट्रेट - जो देव समाज के सम्पर्क से प्राप्त उच्च चरित्र के कारण मेरा बड़ा मान करते थे - के सामने गया। उन्होंने मुझे कहा कि तुम्हारी आय प्रति मास कम से कम एक हज़ार रुपए तो होगी। यह बात ठीक न थी। मैं आपके विकासकारी प्रभावों के अधीन आ चुका था, इसलिए मैं वहीं और उसी समय बताए बिना न रह सका कि ऐसा नहीं है। परन्तु जब मैंने अपनी आत्म परीक्षा की तो मैंने देखा कि उसका ऊंचा अनुमान चाहे गलत था, परन्तु मुझे ऐसा सुनना सुखदायक लगा और उसे ग़लत बताने के लिए मुझे ज़ोर लगाना पड़ा।

मेरे सामने एक भारी सचाई प्रगट हुई। एक बात बिल्कुल झूठी थी, इसने मुझे खुश किया, क्योंकि उससे मेरे प्रशंसा अनुराग की तृप्ति हुई। और जब मैं इसे ठीक किया और मैं सचाई पर चल रहा था, तो मुझे इसके लिए दिल पर ज़ोर देना पड़ा। कैसी उल्टी दृष्टि।

६. जीवन के लक्ष्य के विषय में उल्टी दृष्टि

उल्टी दृष्टि की सबसे भयानक अवस्था जो मुझे आपकी रोशनी में दिखाई देती है, वह यह है कि मनुष्य गौण या साधन मात्र बनने वाली वस्तुओं को मुख्य वस्तु समझे और उन्हीं को अपने जीवन का लक्ष्य माने। आपकी ज्योति इस बात को स्पष्ट रूप से दिखाती है, कि धन तभी लाभदायक हो सकता है जब हम इसे भलाई और विकास में सहायक बना सकें। अन्यथा यदि हम उसे ही अपना लक्ष्य समझकर उसके पीछे दौड़ेंगे, तो यह हमें अपना दास बना लेगा और हमारा पतन करेगा। मेरे सन्मुख अनेक मनुष्यों के - कुछ देव समाज के सभासदों के भी - दृष्टान्त हैं जो अपकी ज्योति से वंचित हैं और जो धन को केवन धन के लिए प्यार करते और कीमती समझते हैं। उन्हें इसकी प्राप्ति से वही सुख मिलता है, जो एक शराबी को शराब का एक के बाद दूसरा प्याला चढ़ाकर मिलता है। उन्माद की अवस्था उन्हें बहुत अच्छी लगती है, यद्यपि उनके पास पहले ही शेष सारे जीवन को इज़्जत से निर्वाह करने के लिए काफी धन है, परन्तु वह उसके नशे को तोड़ नहीं सकते। यदि वह धन दौलत की सनक छोड़ दें, और अपने आत्मा की भलाई का फिक्र करें, तो वह अपने और दूसरों के लिए बहुत हितकर प्रमाणित हो सकते हैं। परन्तु वह तब तक ऐसा नहीं कर सकते, जब तक आपकी ज्योति और शक्ति उनके भीतर प्रवेश करने का अवसर पाकर इस अंग में भी उनके भीतर शुभ परिवर्तन नहीं ला देती जैसा कि उनके जीवन के अन्य अंगों में उच्च परिवर्तन आया

है।

वह आत्मा जो आपके देव प्रभावों के द्वारा इस धन के मोह से उद्धार पा चुके हैं, जानते हैं कि एक समय था जब वह इस भयानक उलटी दृष्टि के शिकार थे।

एक बड़े खानदान का एक नौजवान ग्रेजूएट डाक्टर बनना चाहता था। जब उसे डाक्टर बनने का कारण पूछा गया, तो उसने कहा, "इसलिए कि लोग मेरी एक मूर्ति नगर के एक गेट के नज़दीक खड़ी करें।" उससे प्रश्न किया गया कि तुम्हारा बुत्त क्यों बनाएं?" उसने उत्तर दिया कि मैं लोगों की सेवा करूंगा और दान दूंगा।

यह उल्टी दृष्टि की एक विचित्र घटना है। वह लोगों में नाम पाने के लिए दूसरों की सेवा करना और धन कमाना चाहता था। जीवन के लक्ष्य के विषय में कैसी उल्टी दृष्टि!

परन्तु आपकी शक्ति ले उसे बदल दिया और उसने धन कमाने वाले सब काम छोड़ दिए और अब वह वर्षो से देव समाज में मिशनरी के रूप में काम कर रहा है।

इस अंग में मेरी अपनी उलटी दृष्टि भी बड़ी सीमा तक दूर हो गई है। मैंने भी हर अच्छे या बुरे ढंग से धन इकटठा करना अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया था, ताकि मैं ऊंचे सामाजिक सम्बन्ध और सांसारिक पदवी प्राप्त कर सकूं। जीवन के बारे में कैसा अन्धकार और कितना क्षुद्र लक्ष्य! आपने देव प्रभाव संचार करके मेरी दृष्टि बदलने और मुझे बचाने की कृपा की।

आप की महान ज्योति में मैं देखता हूं कि मुझे उल्टी दृष्टि से बचाने के लिए आपकी देव ज्योति और आपके देव तेज से बढ़कर कोई चीज़ कारगर नहीं। दूसरे शब्दों में मेरी दृष्टि ठीक रखने के लिए आपके देव प्रभावों से बढ़कर किसी चीज़ पर भरोसा नहीं किया जा सकता। मुझे कड़वा तजरुबा है कि जब मैं अपने ऊपर निर्भर करता हूं तो मेरी दृष्टि उल्टी हो जाती है और मैं जीवन का उच्च मार्ग देखने के अयोग्य हो जाता हूं। उच्च जीवन के श्रेष्ठ मार्ग को देखने और उस पर चलने के बिना मैं सुरक्षित नहीं। मैं महसूस करता हूं कि जब मेरे हृदय पर आपका सबसे बढ़कर अधिकार होगा और केवल आपके देव रूप की ओर मेरा दिल आकृष्ट होगा, तब मेरी जीवन यात्रा सबसे बढ़कर सफल होगी।

काश! यह अति कंगाल और तुच्छ हृदय आपके अद्वितीय देव प्रभावों को ग्रहण करे और इस संसार के पतनकारी प्रभावों से अपनी रक्षा कर सके।

जीवन सम्बन्धों में है

मेरे भगवन्!

आपकी अद्वितीय ज्योति में मैं देखता और अनुभव करता हूं कि इस दुखी देश को आपके आविर्भाव की नितान्त आवश्यकता थी। दुर्भाग्य से भारत ने ऐसे विचारक और फिलासफर उत्पन्न किए, जिन्होंने सम्बन्धों के जीवन को मुसीबत, दुख और कल्पित जन्म मरण का चक्कर बताया। इसीलिए उन्होंने सम्बन्धों के जीवन के लिए एक प्रकार की घृणा पैदा कर दी और किसी जंगल के कोने या पहाड़ की गुफा में तथाकथित योग और समाधि के द्वारा कल्पित ईश्वर की खोज पर बल दिया। इस भयानक फ़िलासफ़ी का तत्कालीन और सीधा नतीजा यह निकला कि रमते और निकम्मे साधुओं की एक भारी जमात उत्पन्न हो गई: जिनकी संख्या बढ़कर १ करोड़

से अधिक हो गई है। उन्होंने सब कर्त्तव्यों और ज़िम्मेवारियों को तिलांजली दे दी है। वह केवल अपने सुख के लिए दूसरों की कमाई पर जीते हैं। इसका असर यहीं तक सीमित नहीं था, उसने बहुत से निकम्मे पुरोहित या पुजारी पैदा कर दिए, जो रक्तपाई कीड़ों की न्याई दूसरों का लहू चूसते हैं। जो घरबारी रहे, उन पर भी उस हानिकारक फ़िलासफ़ी का भंयकर प्रभाव पड़ा। उन्होंने घर के जीवन को त्याग देने के योग्य समझा और दूसरों की भलाई से सर्वथा उदासीन हो गए। इस प्रकार प्राय: सारे भारतवासियों की दृष्टि में सारे ही सम्बन्ध बोझ और बखेड़ा बन गए। जो लोग दुनियां में रहे और जिन्होंने सम्बन्ध बनाए, उन्होंने केवल अपनी नीच वासनाओं की तृप्ति और स्वार्थ की पूर्ति के लिए ऐसा किया। यह स्वार्थ धीरे-धीरे इतना बढ़ गया कि इसने भारत की एकता को छिन्न भिन्न कर दिया और इसे जातियों और उपजातियों के असंख्य टुकड़ों में बांट दिया। यह जातियां और उपजातियां एक दूसरे के साथ न विवाह का सम्बन्ध रखती हैं और न खानपान का...।

स्वार्थ ने एक एक साधारण भारतवासी के हृदय से दूसरों के प्रति सब उच्च भावों को नष्ट कर दिया, उसे विश्वगत सम्बन्धों से उदासीन करके निजी स्वार्थ की तंग कोठड़ी में धकेल दिया। नाना जगतों के सम्बन्ध में अपने कर्त्तव्यों और जिम्मेवारियों से उदासीन और अपने ही नीच स्वार्थ की तृप्ति भारतवासियों के लिए शाप प्रमाणित हुई। उसने सामाजिक जीवन और अपनी रक्षा के लिए दलबद्ध और संगठित होने की भावना समाप्त कर दी। इस खंडित और बिखरी दशा ने भारत को दूसरों की ओर ललचाई आंखों से ताकने वाले शून्य व्यक्तियों की धरती बना दिया।

अत: संग्रामशील जीवन जो दूसरों की भलाई में दिलचस्पी और उनके सम्बन्ध में उच्च कर्त्तव्यों के पालन से पैदा होता है, यहां पैदा नहीं हुआ। और वह उसी अवस्था में पड़े सड़ते रहे। पाश्विक प्रवृत्तियां और पाश्विक वृत्तियां इस धरती पर राज्य करने लगी, क्योंकि वह इतनी शक्तिशाली थी कि फिलासफर उन्हें समाप्त नहीं कर सकते थे।... इसलिए भारत का घोर पतन हुआ। देश के इस फालिज के असल कारण को कोई नहीं देखता। उसे जीवित करने के सब प्रयत्नों का निष्फल होना स्वाभाविक है, क्योंकि असल रोग का उन्हें ज्ञान नहीं। भारत नहीं जानता कि बेदान्त की महा भयानक फ़िलासफ़ी इसकी नस नस में प्रवेश कर गई है जिसने उसके भीतर कर्त्तव्य कर्मो के लिए अस्वभाविक घृणा उत्पन्न कर दी है। इस फिलासफी के अधिकार को परे फैंकने की नितान्त आवश्यकता है। हमें अपने आत्मनाश का बोध कराने और उच्च भावों के अभाव को दिखाने के लिए सर्वश्रेष्ठ आत्मिक ज्योति की आवश्यकता है। नीच और स्वार्थपरायण जीवन के भयानक रूप तथा सात्विक शक्तियों के सुन्दर रूप को दिखाने के लिए देव ज्योति की आवश्यकता है। इस गलत फिलासफी के भयानक पंजे तथा नीच शक्तियों और नीच लक्ष्य से मुक्त होने के लिए हमें अध्यात्मिक बल या तेज की आवश्यकता है। उच्च अथवा सात्विक भाव विकसित करने के लिए भी देव तेज की आवश्यकता है। हमारा समूचा आत्मिक जीवन नव निर्माण चाहता है।

भगवन्! ऐसा चमत्कार और ऐसी नई जागृति केवल आप उत्पन्न कर रहे हैं, क्योंकि आप ही सर्वश्रेष्ठ देव ज्योति और देव तेज के स्त्रोत हैं।...

हम न केवल अपने आपको नीच जीवन से

बचाने के लिए प्रयत्नशील हो जाते हैं, किन्तु अन्य आत्माओं के लिए भी उच्च सहानुभूति अनुभव करके उन्हें उनके नीच जीवन से बचाने में सहायता करते हैं। आपकी ज्योति और शक्ति हम जैसे बिल्कुल गए गुज़रे आत्माओं में भी दूसरों की उच्च सेवा के लिए उच्च भाव विकसित करने की आकांक्षा और योग्यता को जागृत कर देती हैं। यह एक आश्चर्य की बात है कि आपने ऐसे मनुष्य पैदा किए हैं, जो देव समाज से एक पैसा भी नहीं लेते, परन्तु अपना सारा या थोड़ा समय देकर इसके सर्वश्रेष्ठ कार्य की सच्चे दिल से सेवा करते हैं।

हमारे हृदयों में जब मैं आपकी अद्वितीय ज्योति और शक्ति के ऐसे स्वर्गीय फलों को देखता हूं, तो मैं आपके देवरूप के सन्मुख गहरी श्रद्धा से झुक जाता हूं। और यह प्रार्थना करने के लिए विवश हो जाता हूं कि मेरी मातृ भूमि - भारत माता - यह अनुभव कर सके कि न केवल भारत, किन्तु सारे मनुष्य मात्र के बचावन हार भारत माता की गोद से ही आविर्भूत हुए हैं, जो एक महा विस्मयजनक घटना है। उनकी पूजा ही भारत को एक शक्तिशाली, संगठित और श्रेष्ठ जाति बना सकती है।

विश्वगत सम्बन्धों में अपनी अवस्था का बोध

जीवनदाता भगवन्!

आपके भीतर हममें नए और उच्च बोध जागृत करने की शक्ति है। आप हमारे पाषाण, हृदय - हीन, कठोर और मुरदा दिलों को जीवित, जागृत, कोमल और भाव - पूर्ण दिलों में परिवर्तित कर रहे हैं। आप मानो मिटट्ी में प्राण संचार करके जड़ को चेतन बना रहे हैं।

आपके इस महान कार्य की लीला मैंने स्वंय अपने तथा दूसरों के जीवन में देखी है। आपके पवित्र प्रभावों में आने से पहले मैं अपने नाना सम्बन्धों में कोई उच्च बोध नहीं रखता था। मैं केवल संस्कार और रिवाज के अनुसार माता के साथ रहता था, परन्तु उनका उपकारी रूप कभी देख नहीं सकता था, और न ही मैं उनके लिए उतनी गहराई में महसूस कर सकता था। आपके अद्वितीय प्रभावों से जीवित होकर मैंने कुछ अनुभव करना आरम्भ किया। मेरे देव समाजी बनने से पहले मेरे पिता जी परलोक सिधार गए थे। मैंने उनके सम्बन्ध में कुछ अपराध किए थे। उनकी मृत्यु के कई साल बाद यह अपहरण मूलक गतियां मेरे सामने आने से मेरे दिल में दुख पैदा करने लगी।

मैंने गलितयां की थी, परन्तु मैं मुरदा जड़ पदार्थ बना रहा। वह गलितयां करते समय या उसके बहुत देर बाद भी मैं उन्हें महसूस न कर सका, परन्तु जब आपके अद्वितीय प्रभावों ने मेरे ऊपर काम करना आरम्भ किया, तब मैंने होश में आना और दुख महसूस करना शुरू किया। इसी प्रकार अनेक बार मैंने अपनी माता के सम्बन्ध में की गई अपनी नीच गतियों को याद किया और दुख महसूस किया है, केवल इसी सम्बन्ध में भी ऐसी अनुपम चेतना और जागृति पैदा कर दी है कि यदि किसी समय मैं अपने किसी नीच अनुराग के अधीन होकर उनके सम्बन्ध में गलत जाता हूं, तो वहीं और उसी समय शरमिन्दगी, पछतावे और दुख की भावना मेरे अन्दर पैदा होती है और मैं अपने आप को धिक्कारने और दूसरों से क्षमा मांगने लगता हूं।... परन्तु पहले ऐसा न था। आपके जीवन दायक देव प्रभावों ने लगातार काम करके मेरे जीवन की जड़ मशीन को एक जीवित गठन में बदल दिया है, जो एक सीमा तक दूसरों का दुख महसूस कर सकती और उससे दुखी हो सकती है।

झूठ आत्मा के लिए पतनकारी है

हे भगवन!

आपके देव प्रभावों से परे मनुष्य आत्मा के लिए कहीं भी रक्षा नहीं है। प्रत्येक आत्मा के लिए आपकी ज्योति नितान्त अनिवार्य है। इस अद्वितीय ज्योति के बिना कोई अपने आत्मा का ठीक ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। परन्तु जब आपकी ज्योति हमारे आत्मा में प्रवेश करती है और हम एक ओर अपना रूप देखते और दूसरी ओर आपके रूप के दर्शन करते हैं, तो यह पुकारने के लिए विवश हो जाते हैं कि, "हे सत्यदेव! आपके बिना हमारा कहीं ठिकाना नहीं।" मुझे इसका बोध हो गया है। मैंने देखा है कि मेरे अपने भाव तो मेरे आत्मा में अन्धकार उपजाने का महा भयानक मैलान या स्वभाव रखते हैं। मेरे अधिकतर भाव नीच अनुराग और नीच घृणाएं हैं, और यदि कोई ऐसे भाव हैं भी, कि जिन्हें उच्च या सात्विक कहा जा सकता है, तो उनमें ऐसी सामर्थ्य नहीं कि वह मुझे आत्मा का रूप और उसकी अवस्था दिखा सकें तथा मुझे सचाई और भलाई की ओर ले जा सकें। इसके विपरीत वह मुझे जोर से झूठ की तरफ घसीटते हैं। मैंने आपकी ज्योति में देखा है कि असत्य की ओर ले जाने वाली मेरी आत्मा की प्रत्येक गति मेरे लिए पतनकारी है। असत्य आखिर असत्य है और मेरे आत्मिक जीवन को नीचे गिराने वाला है। आपकी ज्योति झूठ का भयानक रूप दिखाती है। आपकी यह ज्योति मुझे ऐसे ही स्पष्ट रूप से जैसे कि मैं बाहर की वस्तुओं को बाहर की आंखों से देखता हूं, यह दिखाती है कि असत्य का व्यवहार चाहे किसी भी लक्ष्य के लिए हो, वह मेरे आत्मा के बल को घटाता और उसे मृत्यु की ओर ले जाता है। मैं स्पष्ट रूप से देखता हूं कि यही (असत्य) अस्तित्व का ही कुछ मूल्य नहीं रहने देता। जो अस्तित्व झूठ में रस लेता है, वह कूड़े करकट पर जीता है और उसकी अवस्था बहुत शोचनीय है।

इस प्रकार आपने मुझे असत्य का असली - काला, भयानक और पतनकारी - रूप दिखाया है। इसलिए मेरी आपके चरणों में यह व्याकुलता पूर्वक प्रार्थना है कि चूँकि मेरी अपनी अवस्था ऐसी कृपापात्र है, इसलिये मैं आपके चरणों से अधिक लिपटता जाऊं, ताकि झूठ की ओर ले जाने वाली रुचियों से मेरा उद्धार हो।

आपका अस्तित्व कैसा परम सुन्दर! मानवता के लिए यह कैसा वरदान है कि आप इस पृथ्वी में आबिर्भूत हो गए। जब मैं चारों ओर देखता हूं कि कहलाने वाले पैग़म्बरों ने या सम्प्रदायों के संस्थापकों ने और तथाकथित देवतों और देवियों ने असत्य को अपनाया है, और कहलाने वाली धार्मिक पुस्तकों में जिन्हें लाखों करोड़ों मनुष्य पढ़ते हैं, बच्चे की सी कल्पनाएं और झूठ और पाप की शिक्षा भरी पड़ी है, और धार्मिक कहलाने वाले कई सम्प्रदाय भी धोखे और कपटता को बड़ा सदगुण मानते हैं, और नाना मनुष्यों के साथ अपने व्यवहार में बिना किसी लज्जा के झूठ के खोटे सिक्के का प्रयोग करते हैं, तो मैं इसको एक अत्यन्त विस्मय जनक घटना समझता हूं कि सत्य और शुभ के पूर्णांग प्रेमक देवात्मा इस पृथ्वी में प्रकट हो गए, और मुझे उनकी शरण में आने का महा अधिकार प्राप्त हो गया। मेरे भगवन! ऐसा आर्शीवाद प्रदान करें कि मैं यह सौभाग्य पाकर उन महान ख़ज़ानों को प्राप्त कर सकूँ जो आपके देव प्रभाव प्रदान करते हैं। मुझे यह आर्शीवाद दीजिए कि मैं असत्य को घृणा करने के योग्य होता जाऊं और भिक्षुक बनकर आपका ऐसा बल पा सकूँ कि जिसे पाकर मैं सत्य का साथ दे सकूँ और अपने आत्मा का निर्माण और उसे विकसित कर सकूँ कि जो संसार में हमारे लिए सब लाभों से बढ़कर लाभ है।

चण्डीगढ़ में सेवक उत्सव

चण्डीगढ़ में 18 डी धर्मशाला में 7 जुलाई 2006 से 9 जुलाई तक समाज की वार्षिक तालिका के अनुसार साथी सेवकों के सम्बन्ध में निर्धारित समय पर उत्सव मनाया गया।

9 जुलाई सुबह यहां 9.30 बजे ईतवार का साधन किया गया। यह सभा श्री मान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें खतौली से 2 जन पंचकूला से सुभाष जी, सुरेश जी। जगदीश जी, विनोद जी खेड़ा सब परिवार सहित सम्मलित हुए। कुछ अन्य लोकल धर्म सम्बन्धी भी आ गए। 25 के करीब हाजरी थी। अर्चन, देव स्तोत्र की व्याख्या और प्रार्थना के बाद इस सभा में बताया गया कि पशु पक्षीयों को अपने भले बुरे का ज्ञान नहीं होता। शारीरिक रोगों के विषय में कुछ नहीं जानते। अबोधी होते हैं। अबोधी हालत के कारण बिन आई मौत मरते हैं और हानि उठाते हैं।

मनुष्य अपने आपको चतुर, स्याना और ठीक समझता है, परन्तु उसे भी अपने हानि लाभ का पता नहीं। बहुत से नशे खुशी खुशी पीते हैं। मन्द कर्म करते हैं, मांस खाते हैं, रिश्वतें लेते हैं, बेईमानी करते हैं, परन्तु अन्त में दुःख और हानियां उठाते हैं। समाज के सेवक हो कर भी अपने भले का संग्राम न करके सन्तुष्ट रहते हैं। उच्च भावों की प्राप्ति का कोई संग्राम नहीं करते। केवल देवात्मा का दर ऐसा है, जिसमें मनुष्य की सम्भव रक्षा होती है, विकास होता है। मनुष्य देवात्मा के पैदा किए हुए वातावरण का मोहताज है और रहेगा।

प्रवेश सभा :- 5.30 बजे शाम उत्सव की प्रवेश सभा की गई इसके सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थे। भजन, देव स्तोत्र की व्याख्या के बाद प्रार्थना की गई और फिर बताया गया कि इन सभाओं से लाभ उठाने के लिए कुछ नियमों का पालन करना अवश्यक है श्रद्धा, गुणचिन्तन, उपकार स्मरण नम्रता, प्रार्थना आदि के द्वारा यह सम्भव है। आखिर में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने देवात्मा के निराले देव प्रभावों की करामातों के विषय में बताया। उनको पाने के लिए ही ऐसे अवसर रखे जाते हैं। चार बार जय ध्वनि करके यह सभा समाप्त की गई। एक जन देहरादून की ओर से आ गए थे। कल्याण से भी 3 जन पधारे।

10.07.2006. सुबह की सभाएं, जो साथी सेवकों की धर्म गत सम्बन्ध और परस्पर सहाय और सेवा के विषय में थी, वह श्रीमान बलदेव सिंह जी ने कराई। भजन के गान वा देवस्तोत्र के गान और व्याख्या के बाद सभापति जी ने देवात्मा सत्गुरू की रोशनी वा बल के लिए सहाय प्रार्थना की। इस सभा में बताया गया कि सेवक कौन होता है? कैसे बनता है और रहता है। सेवकों के साथ हमारा धर्म-गत सम्बन्ध बनाने के लिए उनके सेवकों का सम्मान अवश्यक है। नहीं तो गुरू के प्रति श्रद्धा पैदा नहीं हो सकती। साथी सेवकों का परस्पर सम्बन्ध कैसा होना चाहिए। सेवकों के साथ सम्बन्ध बिगड़ने के मोटे मोटे कारण बताए गए। इस सभा में काफी अच्छी हाज़री थी।

शाम की सभा डाक्टर विनोद जी खेड़ा ने करवाई। उन्होंने श्रद्धेय जी, पंडित परमेश्वर दत्त जी, श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी के जीवन के विषय में

बताया। उनका ब्यान काफी प्रभावशाली था। उसके बाद श्रीमान बलबहादुर जी ने, श्री कनल जी वा काका जी के जीवन का ब्यान किया। श्रीमान गुरूबख्श सिंह जी, श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी के सुन्दर जीवनों पर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने रोशनी डाली।

11.07.2006 पहले एक भजन का गान किया गया, "धन्य-धन्य कहती तृप्त न होती, जिव्हा मेरी बारम्बार" फिर देव स्तोत्र का गान और व्याख्या की गई उसके बाद "सेवक दल मेरा उपकारी" नामक भजन गाया गया। यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। फिर पहली श्रेणी का प्रतिज्ञा पत्र का पाठ किया गया। सब प्रतिज्ञाओं को विस्तार पूर्वक पाठ करके उनकी व्याख्या की गई। बहुत सारे जनों से प्रतिज्ञाओं के विषय में पूछा गया। फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने दूसरी सभा करवाई। बहुत सारे कर्मचारियों के विषय में बताया। सेवक दल के मैम्बर बनाने के सौभाग्य के विषय में बताया गया।

उसके बाद विपिन जी ने, सुभाष जी ने, मधु-सूदन जी ने सभाओं से लाभ वा सेवक दल के उपकारों के विषय में बताया।

आखिर में सहाकारियों की सहायता के लिए, गुरू महाराज की विशेष कृपा के लिए और धर्मशाला प्रबन्ध के विशेष सहयोग के लिए धन्यवाद किया।

फिर सब ने मिलकर देव आरती का गान करके जय ध्वनि के साथ इस कार्यवाई को पूरा किया गया। 950 रू० दान में प्राप्त हुए।

(एक सेवक)

शोक समाचार

बहुत ही दुख और शोक की बात है कि हमारे पुराने धर्म सम्बन्धी हरमिन्दर सिंह जी चहल 22 जुलाई की शाम 5 बजे एक प्राईवेट हस्पताल में दम तोड़ गए। वह 70 वर्ष के थे। वह एक महीने से बहुत कमज़ोरी अनुभव कर रहे थे। कई डाक्टरों को दिखाया, बहुत से टेस्ट करवाए, पर कोई लाभ नहीं हुआ।

आखिर उन्हें 16 सैक्टर के हस्पताल में दाखिल करवा दिया। कुछ दिन वहां रहने के बाद, घर वापिस आ गए, फिर 16 जुलाई को 32 सैक्टर मैडीकल कॉलिज के हस्पताल में दाखिल करवाया गया। 18 जुलाई को फिर एक दिमागी रोगों के माहिर डाक्टर के ईलाज के लिए प्राईवेट हस्पताल में 34 सैक्टर में दाखिल करवाया वहां वह काफी बेहतर हो रहे थे होश आ गया, सब को पहचानने लग गए, मुंह द्वारा थोड़ा थोड़ा पीना व खाना आरम्भ कर दिया, ऐसा लगता था कि कुछ दिनों में ठीक होकर घर वापिस आ जाएंगे।

परन्तु बहुत ही दुख और शोक की बात है कि 22 जुलाई को दिल का दौरा पड़ने से वह एक दम परलोक सिधार गए।

ऐसे अच्छे धर्म सम्बन्धी का चला जाना बहुत ही बड़ा घाटा है।

उनका अन्तिम संस्कार वा शुभ कामना की सभा 23 जुलाई ईतवार को 11.30 बजे देव समाज भवन में रखी गई। हम प्रेम जी और अन्य सम्बन्धियों से विशेष हमदर्दी व शोक प्रकट करते हैं। देह त्यागी की आत्मा की शान्ति की कामना करते है।

मन्त्री

Regd. Postal No.Pb (0078) 2006
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

सत्य धर्म बोध उत्सव

आपको यह जानकर खुशी होगी कि सत्य धर्म बोध उत्सव 5 अगस्त से 7 अगस्त 2006 तक धर्मशाला सैक्टर 18 – डी, चण्डीगढ़ में चाव भाव से मनाया जा रहा है। इस मुबारक उत्सव से पहले चन्द दिन का खास सत्संग रखा जा रहा है। यह सत्संग 1 अगस्त से 5 अगस्त सुबह तक जारी रहेगा और 5 अगस्त की शाम 5.30 बजे सत्य धर्म बोध उत्सव की प्रवेश सभा होगी।

आपकी सेवा में विनम्र प्रार्थना है कि आप न केवल स्वयं इस शुभ अवसर से लाभ उठावें बल्कि और अधिकारी आत्माओं को भी साथ लावें।

प्रोग्राम

5 अगस्त शनिवार

प्रवेश सभा : 5:30 बजे शाम
विषय : सत्य धर्म की विशेषता,
सभा से लाभ उठाने की जरूरी शर्तें।
अगले दिन के प्रोग्रामों की सूचना।

6 अगस्त इतवार

पहली सभा : 8.00 बजे सुबह
विषय : आत्म अबोधता की हानियां और आत्म बोध के लाभ।
दूसरी सभा : 10:00 बजे
विषय : स्वास्तित्व सम्बंधी आदेशों का पाठ और व्याख्या।
तीसरी सभा : 5.30 बजे
विषय : भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का अद्वितीय कारज।

7 अगस्त सोमवार

पहली सभा : 8.0 बजे सुबह
विषय : भगवान देवात्मा का नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन प्रदान करने का अनोखा कारज, इस सम्बंधी हमारी जिम्मेवारियां। इस कारज के लिए धन और जन की अपील।
दूसरी सभा : 10.00 बजे
विषय : सभाओं से लाभ का यात्रियों की ओर से वर्णन।

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh-160 022
Phone : 0172-2716914, 4638229

सम्मान भाव से प्रार्थी
बलदेव सिंह (मंत्री)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Post